वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जून - 2018

अद्वितीय सत्गुरू की अद्वितीय दिनचर्या

(My Bhagwan what I saw of him by P.V. Kanal)

29 - कनल जी लिखते हैं कि जब परम पूजनीय भगवान का पहले या दूसरे पूजनीय देव शास्त्र पर देवालय में लैक्चर दिया जो चुका था, तो मैंने देव आश्रम में वापिस आने के बारे में सोचा, मैंने देखा कि मेरा बड़ा बेटा सत्यावान (काका जी) कहीं गुम हो गया है। वह केवल 4 वर्ष और कुछ महीनों का था, कुदरती मुझे फिक़र होना आवश्यक था। उसी समय उसे खोजना शुरू किया और आखिरकार वह मिल गया। मेरी पत्नी की बहन उसे देव आश्रम में साथ ले गई थी। पूजनीय भगवान ने इस घटना के बारे में सुना जैसा कि दूसरों के हित का भाव उनके भीतर प्रबल था, उन्होंने मुझे सारी घटना के विषय में पूछा। जब मैंने उन्हें बताया कि मेरी sister-in-law बिना मुझे बताए उसे देव आश्रम में ले गई थी, पूजनीय भगवान सदमें में आ गए। उन्होंने इसके विषय में फरमाया, "देखो, आवश्यक बोध के बिना, किस प्रकार दूसरों को इतना दुख पहुंच सकता है और सम्बन्धों में अनेकता आ सकती है। उन्हें इतना भी अपने आप बोध नहीं था, और जाग्रति नहीं थी, जिससे वह सोच सकती कि माता पिता कितने फिक़रमन्द होंगे, जब उनको अपने प्यारे बच्चे के विषय में कुछ पता नहीं लगेगा कि वह कहां हैं? उसे सोचना चाहिए था, कि किस तरह माता पिता इधर उधर ढूंडते फिरेंगे, क्यों मैं उन्हें इस कदर अनावश्यक रूप से फिकर में डाल रही हूं।"

उच्च बोध मनुष्य को दूसरों के दुख का बोध देते हैं, दूसरों के दर्द और खुशी का एहसास दिलाते हैं और दूसरों को अपनी क्रियाओं से दुख पहुँचाने से रोकते हैं। हमें इस प्रकार की क्रियाओं से बचना चाहिए, जिनसे दूसरों का कष्ट पहुँचे। यदि सम्भव हो दूसरों की खुशी का ज़रिया बनना चाहिए।

फिर परम पूजनीय भगवान ने अनुभव किया कि जब भी वह किसी नई वा दूर दराज जगह पर जाते (केवल अपनी रोज़ाना की सैर को छोड़कर जिस रास्ते का सबको पता होता था।) वह सदा अपने निकटी सम्बन्धी वा विशेष किसी सेवक को बताकर जाते, वह कहां जा रहे हैं। यदि अचानक कोई दुर्घटना हो जाए, उनका पता लगाया जा सके। अपने सम्बन्धों में इस प्रकार की सूचना दिया जाना बहुत ठीक रहता है, कई बार इसके प्रति उदासीनता रिश्तों में अनावश्यक मुसीबत वा हानि पहुँचाती है।

नोट:- पढ़ने में यह रोज़ाना की छोटी छोटी घटनाएं हैं, परन्तु देवात्मा गुरू होकर किसी के छोटे से छोटे दुख वा परेशानी से उनके देव हृदय पर आघात लगा देती थी, जो हम मनुष्यात्मा समझ नहीं सकते।

धार्म जीवन

खण्ड 31 अंक 5
जून – 2018
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

धर्म क्या है और क्या नहीं है?

साधारण मानवता इस बात से अनभिज्ञ है कि वास्तव में धर्म क्या है, और क्या नहीं है।

इस या उस उपास्य देवता, गुरू, मुनि, पैगम्बर को मान लेने उनकी पूजा, अर्चना पाठ जप, तप का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं। कोई चिन्ह धारण कर लेना कोई तीर्थ – यात्रा वा किसी विशेष स्थान पर स्नान कर लेना धर्म नहीं। यह क्यों धर्म नहीं? जबकि करोड़ों मनुष्य इन साधनों को धर्म समझते है, मन्दिरों, गुरूद्वारों, मसीतों, चर्चो की गिणती बढ़ रही है, परन्तु दुनिया में दिन प्रति दिन पाप भी बढ़ रहे हैं। चोरी, ठगी, रिश्वत, नशे, मांसाहार, बलात्कार दिन पर दिन बढ़ रहे हैं। घर घर में सम्बन्धों में नर्क है। बाप बेटे में पति पत्नी में इसी प्रकार अन्य सम्बन्धों में स्वार्थ, स्वेच्छा चारिता, अंहप्रियता से जो नर्क पैदा हो रहा है, उसकी उदाहरणें सब जगह बहुतायत में मिलेंगी। सैंकड़ों की गिणती में साधू सन्तों के द्वारा जीवन से धोखे, व्यभिचार अन्याय, अपहरण की क्रियाएं आम हैं। यहां हर रोज़ सत्संग के नाम पर पाप होते थे, वह उपदेशक जेलों में बन्द हैं, परन्तु हमारे देश के अन्धविश्वासी अभी भी उनकी पूजा करने में लगे हैं। यह सब इसलिए कि यह सब अन्ध विश्वास, संस्कार के कारण है, वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं है। तर्क से देखो कि यदि धर्म के कर्म काण्ड करने से धर्म आता, तो दुनिया आज स्वर्ग का दृश्य पेश करती।

धर्म क्या है?

अब इस विषय पर विचार करें। धर्म आत्मा की उच्च क्रिया या उच्च गति करने की अवस्था है। उच्च गति उच्च भावों के बिना नही हेाती, दूसरे अर्थों में धर्म उच्च भावों का ही नाम है। जहां जितनी अच्छाई, नेकी है, वहां उतना ही धर्म है।

उच्च भाव क्या होते हैं?

आओ, अब इनके विषय में सर्वप्रथम, मोटे तीन भावों को जाने, जिनके बिना किसी पूजा पाठ, गुरू की पूजा, ईश्वर की पूजा करके भी मनुष्य साधारण शरीफ और नेक नहीं बन सकता।

यह भाव हैं, ईमानदारी, पवित्रता, न्याय भाव। इन भावनाओं के बिना मनुष्य वहिशी वा पशु से भी नीचे गिर जाता है। इन भावों की अवर्तमानता ने निकट से निकट के सम्बन्धों, माता – पिता, बहन भाई पति पत्नी, नौकर मालिक, सबके सम्बन्धों में कलह कलेश और नर्क पैदा किया हुआ है। कोई पूजा पाठ करले, इन भावों के बिना धर्म की भी ABC शुरू नहीं

होती। हररोज़ दुकानदार पूजा करके आते हैं, अपनी दुकानों पर आकर भी धूप बत्ती करते हैं, परन्तु उनकी यह धार्मिक क्रियाएं उन्हें झूठ और बेईमानी से नहीं रोकती। पवित्रता के न होने से बड़े बड़े धार्मिक बाबा बलात्कारी बने हुए हैं, धर्म की आड़ में जो घिनौने काम होते हैं, वह प्रतिदिन की घटनाएं हमें बताती हैं। न्याय की भावना की अर्वतमानता में बड़े बड़े जज, वकील झूठ, फरेब करते हैं, रिश्वतें लेकर गुनाहगार छोड़ दिए जाते हैं, ओर बेगुनाह सजा पाते हैं। यह सब धार्मिक साधन करते हैं, परन्तु उन्हें अपनी बेईमानी, अपवित्रता, अन्याय धर्म के साधन नहीं दिखाते। रिश्वत खोरी से देश में त्राहि त्राहि हो रही है, रिश्वत के बिना आप कोई काम नहीं करवा सकते, पुलीस पैसे लेकर बेगुनाहों को फंसा देती है। आप इन सबसे पूछ कर देखो, वह अवश्य एक वा दूसरे धर्म के मानने वाले हैं, कोई धर्म उनकी इन क्रियाओं पर रोक नहीं लगाता। बल्कि अपनी इन नीच इच्छाओं के पूरे होने पर ईश्वर वा देवी देवताओं को भी भेंट चढ़ा देते हैं।

इन तीन भावनाओं से ही संसार में स्वर्ग आ सकता है, परन्तु धर्मों का लक्ष्य ही किसी उच्च भावना को पैदा करना नहीं इनसे ऊपर और उच्च भावनाएं हैं, जो धर्म के मूल मन्त्र हैं, वह है दया की भावना, सन्मान वा श्रद्धा की भावना, कृतज्ञता अर्थात शुक्रगुज़ारी की भावना इससे भी आगे अपनी नीच गतियों को देखने वा स्वीकार करने की भावना।

दया वा हमदर्दी के बिना, पर पीड़ा, पर दुख का ख़्याल तक नहीं आ सकता, कोई सेवा नहीं हो सकती, कोई परोपकार का काम नहीं हो सकता। मनुष्य शेरों, चीतों की तरह केवल स्वार्थी और हानिकारक बनने के लिए मजबूर है। वह केवल अपने सुख के लिए जीता है। उसकी सुख प्राप्ति से चाहे कोई बेगुनाह फांसी पर लटक जाए चाहे, उसके सुख के पूरा करने के लिए एक गरीब जमीन बेच दे, उसकी बला से। जहां दया भाव नहीं, वहां कोई धर्म नहीं।

श्रद्धा वा सन्मान भाव धर्म के मुख्य और मूल मन्त्र हैं। यह एक विशेष प्रकार की अध्यात्मिक आंख है, जो नेचर के सब अस्तित्वों के गुण, महानता और अन्दरूनी सुन्दरता को दिखाती है। गुणवान मनुष्यों, विशेषकर निष्काम परोपकारियों के त्याग और उनके कार्यों की सुन्दरता को सब जन नहीं देख सकते, श्रद्धा की आंख से यह दिखाई देता है। श्रद्धा बिना किसी गुणवान व्यक्ति का गुणगान नहीं कर सकते। श्रद्धा के बिना कोई विद्या, कोई चतुराई से किसी का महान रूप दिखाई नहीं दे सकता। श्रद्धा बिना किसी की महानता का चित्रण नहीं हो सकता। इसके बिना किसी महान कारज के लिए समर्पण वा त्याग नहीं हो सकता। त्याग ओर सेवा के बिना कोई धर्म नहीं। कोई उच्च गति नहीं।

<u>शुक्रगुज़ारी वा कृतज्ञता की भावना : –</u>

श्रद्धा भाव की तरह शुक्रगुज़ारी का भाव भी धर्म का भाव है। यह भाव बहुत विरले इन्सानों में होता है। इस उच्च भाव के बिना सम्बन्धों में मेल नहीं हो सकता। कृतज्ञता की भावना के बिना दूसरों के द्वारा की गई मेहरबानियां दिखाई नहीं देती। जहां कृतज्ञता का उच्च भाव नहीं वहां स्वार्थ है, जहां स्वार्थ है, वहां कोई धर्म नहीं, आपसी सम्बन्धों ने नर्क है। कृतज्ञता धर्म का

भाव है, यह वह आंख है जिसके बिना बड़े बड़े उपकारी और उनकी मेहरबानियां नज़र नहीं आती। "मतलब निकल गया और पहचानते नहीं" वाली बात सारी समाज पर हावी है। कृतज्ञतां के बिना कोई धर्म नहीं और न कोई उच्च गति हो सकती है।

अपनी कमी, अपनी नीचता देखने की योग्यता: - सब मनुष्य अपने आपको ठीक समझते हैं। कहने को तो हम कह देते हैं कि "Err is human" मनुष्य ग़ल्तियों का पुतला है। लेकिन अपने आपको ग़ल्त देखना, या अपनी ग़ल्ती को स्वीकार करना अति कठिन है। उल्टा सधारणत मनुष्य अपनी गल्तियों को भी Justify करने की कोशिश करता है।

प्रत्येक मनुष्य अपने आपको सुन्दर, निर्दोष और ठीक समझता वा प्रगट करता है। अपनी बड़ी से बड़ी ग़ल्ती के विरूद्ध भी कुछ सुन नहीं सकता और न स्वीकार करता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी ग़ल्ती को स्वीकार कर ले, तो आज कचहरियों का काम आसान हो जाए। वकील, जो झूठी दलीलें देकर गल्त को ठीक सिद्ध करते हैं, उनका धन्धा ही खत्म हो जाए। अंह का प्यार मनुष्य को अपनी ग़ल्ती स्वीकार करने नहीं देता।

उपरोक्त भाव की वर्तमानता मनुष्य को महान बनाती है और धर्मवान बनने के लिए आवश्यक है। जैसा कि हम देखते हैं कि धर्मों, धर्म स्थानों , पूजा पाठ की कोई कमी नहीं परन्तु मानव हृदय दिन पर दिन इन उच्च भावनाओं से रिक्त होते जाते हैं। कारण साफ है कि मनुष्य धर्म को लालच वा डर से मानता है, अपनी मुरादें पूरी करने के लिए, दूसरा यदि आस्था न रही तो पता नहीं क्या मुसीबत आ जाएगी। क्या किसी धर्म मानने वालों की यह प्रार्थना है? कि उनके भीतर उच्च भाव पैदा हों, उनकी नीचता दूर हो। हृदयों में यह भावनाएं जगाने का किसी धर्म में काम नहीं हो रहा।

अब अगला प्रश्न है कि यह भावनाएं कैसे पैदा हो?

मनुष्य के जीवन में दो नियम काम करते हैं, एक विरासत उसकी जन्मजात योग्यता (inheritance) शारीरिक, मानसिक और भावात्मिक योग्यता हमें पूर्वजों से मिलती है। उसी योग्यता के अनुसार उसका विकास सम्भव है।

दूसरा वातावरण :- जिस वातावरण मे वह प्रतिपालित होता है, उसका ही रंग ही उस पर चढ़ता है। यदि किसी जन को उपरोक्त उच्च भावों की पूजा विरासत में मिली है, और उसको विकसित होने के लिए उच्च भाव धारियों का वातावरण मिलता है, तो उसके भाव भी बढ़ने लगते हैं। उच्च भावधारियों की संगत मनुष्य के लिए हवा पानी की तरह अति आवश्यक है। परन्तु अच्छी विरासत पाकर भी अगर नीच संग का वातावरण मिलता है, तो न केवल उसकी अच्छी विरासत का नाश हो जाता है, बल्कि वह स्वयं और भी नीच बन जाता है। नशई लोगों की संगत अवश्य नशई बनाती है। शाकाहारी परिवारों से आए बच्चे, मांसाहारियों की संगत में रहकर मांसाहारी बन जाते हैं। जूएबाजों की संगत जूएबाज बना देती है। कहने का अर्थ है कि मनुष्य जैसी संगत में विचरता है, उसका उस पर रंग चढ़ना लाज़मी है।

मनुष्य को अपने भीतर उपरोक्त उच्च भाव पैदा करने, अपने स्वार्थ, स्वेच्छाचारिता, अपनी मिथ्या को देखने, नाना सम्बन्धों में अपने बुरे बृतावों को देखने के लिए उच्च संगत की आवश्यकता है।

अब प्रश्न यह है कि क्या कोई धर्म इन भावों को पैदा करने वा नीच भावों को दिखाने वा उससे निकालने का काम कर रहा है, तो उत्तर स्पष्ट है, कोई नहीं।

नेचर के विकास क्रम में एक ऐसा आर्विभाव हुआ है, जिनको पूजनीय भगवान देवात्मा कहते हैं जिनमे स्वयं में ऐसी अद्वितीय शक्तियां पैदा हुई हैं, जिनमें ऐसी अद्वितीय रोशनी पैदा हुई, ऐसा अद्वितीय बल पैदा हुआ, जिनके प्रभावों ने ऐसी उच्च संगत पैदा की है, जो मनुष्य को उच्च बनाने और नीचता से निकालने की समर्थ्य रखती है।

सर्वप्रथम उन्होंने फरमाया है कि बुरा वा भला बनना हमारे पिछले कर्मों का फल नहीं, मनुष्य को उसके भाव चलाते हैं, यह भाव हमारे आत्मा वा जीवनी शक्ति के अंग हैं। उनकी विलक्षण शिक्षा है कि उच्च भाव हमारी जीवनी शक्ति का विकास करते हैं और नीच भाव जीवनी शक्ति का नाश करते हैं। जीवनी शक्ति का पतन मनुष्य के अस्तित्व का पतन है। नीच भाव आत्मिक रोग हैं, वह किसी, जप, तप, पूजा पाठ से नहीं जाते। उन रोगों और उन रोगों से जो पतन होता है उसको जानने की आवश्यकता है। उनकी पैदा की धर्म संगत पाप, मिथ्या को मिटाने और उच्च जीवन पैदा करने का काम करती है। उच्च भाव पैदा करके सम्बन्धों में जो नर्क है, उसे मिटाने और स्वर्ग लाने का काम करती है। वह मनुष्य की मूल वस्तु आत्मा की सुरक्षा करने में समर्थ्य है। वह परोपकारी, कृतज्ञ, श्रद्धावान, दयावान, ईमानदार, पवित्र जन पैदा करती है, इस संगत ने मानव जगत के उद्धार के लिए कितने परोपकारी जन पैदा किए। देवात्मा ने देव धर्म जो विज्ञान मूलक धर्म है, उसकी स्थापना की है, उसका कारज निराला है, इसमें ही मानवता की सारी भलाई है और यही सच्चा धर्म है।

उन्होंने इस संगीत की रचना की है: - "जीवन ब्रत मेरा पूर्ण हो, जीवन तत्व की ज्योति फैले, जीवन बल चारों दिग वितरण हो। अधिकारी जन उच्च बनें, सत्य धर्म का बोध उत्पन्न हो। विश्व के सकल विभागों मे ही उच्च गति प्रद परिवर्तन होवे। जो कुछ शुभ हो सब विकसित हो, जो कुछ अशुभ हो, सब चूर्ण होवे।"

बलदेव सिंह

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

मैं अदना और तुच्छ पर महा उपकार - 6

(उच्च भावों के अंकुर फूटने आरम्भ हुए)

मैं एक अति पिछड़े गांव में 90 वर्ष पहले पैदा हुआ। बहुत जन जो गांव के निवासी थे, अनपढ़ और मजदूर किसान और सीधे सादे थे। मैं भी एक जंगली जीव ही था। सफाई, शिष्टता, सभ्यता से पूर्ण अनजान। ऐसा कोई बोध गांव की संगत में पैदा होना असम्भव जैसा ही था। जब भी पहले स्कूल और फिर कालिज में जाने लगा, उस समय महसूस होने लगा कि मुझमें कई प्रकार की नई होश और सूझ पैदा हो रही है। फिर जब मैं देव समाज की संगत की तरफ मुंह किया, उस समय मैं F.A. और फिर B.A. में पढ़ता भी था। उस समय मुझे अपने उजड्ड पन वा बर्वता का एहसास होने लग गया था।

मुझे सिक्ख धर्म के पाठ आदि करते हुए (जो मैं वर्षो तक बहुत किए थे) देव समाज के साधू फरिश्ते हमारे घर आए और मुझे देव समाज का एक पूजनीय ग्रन्थ "मुझ में देव जीवन का विकास" दे गए। मैंने भूखों की तरह दो दिन में उसका पाठ कर दिया। उसमें से मुझे ओर कुछ ज्ञान, ध्यान तो समझ में नहीं आया, न ही मुझे देवरूप की समझ आई, परन्तु उसके पाठ ने मेरे मन को इतना झंझोड़ दिया कि मैंने एक अटल निश्चय कर लिया कि यदि मैंने कोई ज़िन्दगी में काम करना है तो देव समाज का ही करना है। इसके लिए मेरे लिए सदा के लिए यह आवश्यक हो गया कि जहां भी देव समाज की संगत वा प्रचार होता था, मैं वहां अवश्य पहुँचता था। अभी मैं 20 वर्ष का भी नहीं हुआ था कि मुझे पता लगा कि भटिंडे में सत्संग हो रहा है, मैं एक देव समाजी बजुरग साथी के साथ (सन्मान के योग्य श्रीमान बाबू राम जी) गोनियाना मण्डी से पैदल ही पहुँच गया जो 12 - 14 किलो मीटर की दूरी पर है। रेल की लाईन के साथ साथ चल पड़ा। क्योंकि 1947 का समय था, रेल आदि सब बन्द थे। उक्त श्रीमान जी मुझे देव समाज की बातें बताते जाते थे। (वह 2 - 3 जमातों से अधिक नहीं पढ़े थे) मुझे उनकी बातें बहुत प्यारी लगती थी। उसी सफर के दौरान मैं बोल चाल में दो तीन गालीयां, जो अशलील शब्द ही थे, जैसी मेरी बोल बाणी थी, निकाल दी। मुझे कुछ पता नहीं लगा। श्रीमान जी ने बड़ी मीठी भाषा वा नम्रता से मुझे टोका और कहा, "सरदार जी, आप बहुत पढ़े लिखे हो, आपके मुख से गालीयां सजती नहीं, मैंने कहा कि मैंने कब गाली निकाली है। फिर उन्होंने कुछ अश्लील शब्दों की ओर ईशारा करके समझाया तो मुझे पता लगा कि हां, मैंने गाली निकाली है। मेरे सिर पर शर्म से जैसे पानी पड़ गया कि मैं अपने आपको क्या कुछ बनाए फिरता हूं, परन्तु मेरी असल औकात यह है। मुझे याद नहीं कि शायद ही उसके बाद कभी मेरे मुंह से गाली निकली हो।

ऐसी हालत में मुझे देव समाज मिली। उसकी नायाब और अमूल्य संगत ने मेरे जंगली - पन को घड़ना शुरू किया, जो सदा सारी उमर जारी रहा है। उस अवस्था में मुझे उच्च वा नीच भावों का क्या पता होना था। मैं उच्च भावों का नाम तक नहीं जानता था। न ही उच्च भावों की आवश्यकता वा महत्व का तनिक भी ज्ञान था।

देव समाज की जादू भरी संगत ने धीरे धीरे

मेरी काया कल्प करनी शुरू की। इस संगत के विषय में भगवान देवातमा ने फरमाया है: -

"अन्धकार ग्रस्त और नीच वासनाओं, उतेजनाओं और अंह शक्तियों के अनुचित अधिकार में फंसे हुए आत्माओं की विनाश से रक्षा ओर उनका विकास साधन करने के लिए देवात्मा ने एक अति उच्चत्म संगत पैदा की है। यह संगत कोई मामूली जोड़ मेल या वाक्य विलास या कथा कीर्तन आदि की संगत नहीं, किन्तु यह वह संगत है कि जो देवात्मा के देव प्रभावों को आत्माओं तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होती है। इस संगत में बैठकर: -

1) आत्माओं का अन्धेरा दूर होता है।

2) उनकी बेसुधि दफा होती है, उनको अपनी रूहानी जिन्दगी के विषय में होश मिलती है।

3) एक या दूसरी नीच क्रिया अपने बुरे और महा हानिकारक रूप में दिखाई देती है।

4) और उस से निकलने या मुक्त होने के लिए प्रेरणा पैदा होती है।

5) एक या दूसरे प्रकार का उच्च भाव जाग्रित वा उन्नत होता है।

6) और वह एक या दूसरे सम्बन्ध में कुछ सेवाकारी बनना चाहता है।

7) और इस प्रकार से आत्मिक उच्च रूप और विकास प्राप्त करता है।

ऐसा हो कि तुम इस नादर उच्च संगत और उसके विशेष देव प्रभावों की कदर कर सको और उससे अधिक से अधिक लाभ उठाने के इच्छुक हो सको और लाभ उठा सको"

विकासालय की संगत में दो दो दिन एक एक उच्च भाव को लेकर प्रत्येक सप्ताह सभाओं में उपदेश होते थे, जो अकसर श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी, फरिश्ता मूरत देते थे। उन सभाओं में बैठकर मुझे कई उच्च भावों का नाम पता लगा। उच्च भावों का बहुत बड़ा महत्व समझाया जाता था। जो मुझे कुछ समय समझ नहीं आता था। श्रद्धा, कृतज्ञता की मामूली भी समझ नहीं थी। यहां तक कि शुरू शुरू में मुझे यह भी निर्णय करना कठिन होता था कि श्रद्धा और कृतज्ञता में क्या अन्तर है? मेरे सीनियर नौजवान साथी कई बार मुझे समझाने का यत्न भी करते, परन्तु मुझे श्रद्धा का भाव क्या है, कृतज्ञता का भाव क्या है, इसकी काफी समय तक समझ नहीं आई। परन्तु धीरे धीरे मुझे आत्मिक रोशनी के मण्डल में बैठते बैठते, कुछ समझ आनी आरम्भ हुई। कुछ समय बाद उस रोशनी भरे वातावरण में रहते रहते, दो दो चार की तरह इनकी वास्तिकता और इन दोनों बहुमूल्य भावों का अन्तर बहुत साफ साफ समझ आने लगा।

अब तो बहुत समय से मुझे विरासत में श्रद्धा, कृतज्ञता की पूंजी देने वाले अपने श्रद्धेय माता - पिता, दादा दादी, नाना नानी जी और पड़दादा, पड़दादी और इससे भी ऊपर के पूर्वजों का अपना आप, इतना ऋणी और करजाई अनुभव होता है, उसका भारी बोझ महसूस होता है। शायद ही कोई ऐसा दिन बीतता होगा, जब मैं अपने आपको उनके चरणों का ध्यान धरकर धन्यवाद देने के लिए उनके सामने बिछने की लालसा न रखता हूं और उनके लिए मेरे हृदय से अपनी तुच्छ योग्यता के अनुसार शुभ कामना न निकलती है। उनके इस महा दान के बिना, मैं तो बिल्कुल पशु या अध्यात्मिक महा पिंगला ही रहने के लिए बेबस रहता।

अद्वितीय विकासालय की संगत में, जिसके मुख्य संचालक श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी श्रीमान

मेवा सिंह जी और श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी होते थे, मेरे पूर्ण बंजर हृदय के भीतर धीरे धीरे उच्च भावों के अंकुर फूटने लग गए और देव प्रभावों की खुराक से बढ़ने लग गए।

विकासालय की नादर सत्संग से मैं तह दिल से अनुभव करता हूं कि अपनी निज अयोग्यता, महा अबोधता और अन्धता के कारण, जितना उस समय लाभ उठाना चाहिए था, नहीं उठा सका। परन्तु फिर भी बेहद लाभ हुआ।

उस समय विकासालय में 15 दिन संगत होती थी। प्रत्येक सप्ताह सोमवार, मंगलवर को श्रद्धा भाव पर, बुद्धवार वीरवार कृतज्ञता पर, बाकी दो दिन हानि चिन्तन वा हानि परिशोध के भावों को लेकर श्रद्धेय श्रीमान जी सभा करवाते थे। एक सभा बाद में श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी करवाते थे। ईतवार का साधन गुरू महाराज की महिमा को लेकर होता था। हमें भी हुक्म था कि हम अपनी साधन कापी लिखकर श्रद्धेय श्रीमान जी के कमरे के सामने गोल मेज पर रख दें। मैं कभी कभी श्रद्धा का साधन, महान जनों के गुण चिन्तन करके लिखता था, कभी उपकारियों के उपकार स्मरण करके लिखता था। उपरोक्त सभाओं और लिखने का साधन करते करते मेरे भीतरश्रद्धा का भाव और कृतज्ञता का भाव फूटने लगा और उन्नति करने लगा।

ज्यों ज्यों यह दोनों भाव पैदा होते गए, तब मुझे नई आन्तरिक आंखे मिल गई। मुझे महान और उच्च इन्सानों के गुण और महानता स्पष्ट नज़र आकर झुकाने लग गई। मेरा हृदय और मेरा मन बेबस उनके आगे झुकने के लिए मजबूर हो गया। श्रद्धा भाव के बढ़ने से, फिर मुझे गुणवानों के आगे झुकने से उच्च रस वा सुख मिलने लगा। और मैं किसी के गुण देखने वा ब्यान करने के योग्य होता गया। इस प्रकार उच्च खुशी से भरने लगा। कुछ वर्षों के बाद तो सारी उमर के लिए मुझे एक चाबी मिल गई, मैं स्वंय महान जीवनियां ढूंडने लगा, उन्हें पढ़ने वा निहारने लग गया। कोई देश, कोई धर्म, कोई जाति हो उनके महान इन्सानों के जीवन मैं प्राप्त करने लगा, उन्हें बार बार पढ़कर निहारने लगा, वह लिखतें मेरे लिए अमूल्य खज़ाना बन गई और उनका अपने लिए सारी उमर का साथ आवश्यक हो गया।

इसमें मुझे बड़ा लाभ हमारे कालिज की एक पाठ्य पुस्तक, Roll call of Honour by Quiller Qouch के बार 2 पाठ ने पहुँचाया। एक पुरानी पुस्तक Book of Golden Deeds ने भी मुझे बहुत प्रभावित किया। सभाओं में बताए गए उदाहरणों, शिवा जी, करण, भीष्म श्रवण कुमार, सर गंगाराम, पन्ना धाई, भामा शाह, पूर्ण भगत सिंह आदि के जीवनों के सुन्दर पक्षों ने सदा ही मेरे श्रद्धा भाव ने Thing of Beauty, Joy forever बना दिया। उच्च जीवनों का पाठ मेरे लिए आकर्षण और दिलचस्पी बन गए। किसी सीमा तक श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के जीवन को निहारने योग्य बन गया। सरदार साहिब सरदार जमीयत सिंह जी, भाई मोहन देव जी, कनल जी आदि उच्च आत्माओं की महिमा की चमक मुझे दिखने लगी और प्यारी लगने लगी। अनुरागी शिष्यों के रूप भी कुछ दिल को झुकाने लगे ओर मैं धन्य धन्य अनुभव करने लगा।

मेरे चारों तरफ के सब लोगों के सुन्दर जीवन मुझे दिखाई देने लगे, मैं उनके आगे झुककर उच्च रस से भरने लगा। किसी सुन्दर कुंवारी कन्या की पाक वा पवित्र दृष्टी, सारी उमर उसके आगे झुकाती रही और

मेरा भला करती रही। किसी की ईमानदारी मोहित करती रही है। किसी का त्याग और सेवा मुझे सदा अपनी तुच्छता और हीनता दिखाते रहे।

श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी का महान त्याग, तप, श्रद्धा, पवित्रता, सादगी, कृतज्ञता, गुरू भक्ति से भरा हुआ रूप देखकर गुरू महाराज के बाद उनका मिलना अपना सबसे बड़ा सौभाग्य महसूस होने लगा। श्रद्धेय श्रीमान मेवा सिंह जी का महान, नम्र, श्रद्धावान, दयावान, दानी रूप बहुमूल्य दिखने लगा। उच्च लोकवासी श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी की श्रद्धा, त्याग और गुरू सेवा, मुझे कई बार अपने रूखे सूखे व्यवहार के बावजूद उनके चरणों पर ढह जाने और रोने के लिए मजबूर कर देती थी। माननीय श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी की सेवा, संघर्ष और साधनों ने मुझे बहुत कुछ दिया।

18 - 20 वर्ष की उमर तक सिक्ख गुरू साहिबान को मानता था, उनकी बाणी मुंह जुबानी याद की, बहुत पाठ किए, उन्हे नमन किया। मुझे अपने भीतर श्रद्धा भाव के बढ़ने से, गुरू साहिबान, विशेषकर गुरू नानक देव जी, उनकी अगली चार पातशाहियों और नौवें और दसवें गुरू साहिब उनके ठोस उच्च गुण - धारी रूप मुझे उनके आगे झुकाता था। मुझे पता लगा कि गुरू साहिबान के प्रति मेरा पहला सत्कार, पूजा पाठ सब संस्कार रूप में या अपने चौतरफा वातावरण कारण ही था। अब जो उनके लिए सत्कार हैं, वह सच्ची श्रद्धा को लेकर है। उन उच्च हस्तियों के चरणों की धूल सदा सौभाग्य अनुभव होता है और मेरी उच्च खुराक बन गई है। देवात्मा गुरू की पैदा की संगत में उपजे मेरे श्रद्धा भाव ने मुझे और धर्मों की महान हस्तियों का उच्च रूप निहारने के योग्य बना दिया।

श्रद्धा भाव के बढ़ने से धीरे धीरे चारों जगतों के आस्तित्वों के भीतर जहां भी अच्छाई और महानता है, उसे देखने, सराहने की आंख पैदा होने लगी। वह अस्तित्व मेरे लिए Thing of beauty joy for-ever बन गए। The roll call of honour में से फादर डैमीयन, फलोरैंस नाईटिंगेल, लिंकन, गौर्डन, बौलीवर, पास्चर आदि महान हस्तियों की संक्षेप जीवनियां थी, वह सदा के लिए मुझे प्यारी लगने लगी।

भाई वीर सिंह जी ने लिखा है: -

"जिथे जिथे कोई प्यारूया कर गया प्यार,
उत्थे उत्थे मैंनू भी कुछ कुछ महिकार, भासण लग गई
अते आनन्द हिलौरे देण लग पई।"

एक बार मैं मोगा में कश्मीर पार्क में से सैर करके वापिस आ रहा था (यह 1965 के करीब की बात है।) कि मैंने देखा कि एक भैंसा एक बैलगाड़ी में जुता हुआ था। गाड़ी बहुत अधिक बोझा से लदी हुई थी। सड़क पर एक ऊंची पुली आ गई। ऊंची होने और बोझ अधिक होने के कारण भैंसे का वहां बहुत ज़ोर लगा, फिर भी वह गाड़ी न चली। भैंसा घुटनों के बल हो गया। गर्मी के कारण भैंसा पसीना पसीना हो गया, उसके मुंह से झाग निकलने लगी, उसका सांस फूला हुआ था, वह उस हालत में कुछ सुसताना चाहता था, परन्तु गाड़ी के मालिक ने पूरे ज़ोर से उसके नंगे शरीर पर सोटे मारने शुरू किए। उच्च फरिश्तों के देखने वाला दृश्य था, वह घुटने सीधे न कर सका, घुटने के बल ही उसने पुली पार कर दी। यह बात जैसे सदा के लिए मेरे हृदय में चुभ गई। इस नज़ारे ने सदा के लिए पशु जगत की महानता और सुन्दरता की पुस्तक मेरे सामने खोल दी। उसके बाद पशु जगत के जीव गाएं, भैंसे,

घोड़े, बैल, गधे आदि मेरे प्यारे मीत बन गए। एक एक बार उनके गले से लिपटने और प्यार करने के लिए बेबस हो जाता हूं।

बहुत बार जब मैं निम्बू पानी पीता हूं, फल सब्जियां खाता हूं तो मेरा सिर उनके आगे झुक आता है। अपने घर में भी जब मैं कोई पेड़, पौधों को, फूलों से श्रंगारे देखता हूं, तो मैं उन्हें प्रणाम करने लगता हूं, दिल सरूर से भर जाता है। सैर पर जाते हुए फसलों, पेड़ अकसर झुकाते रहते हैं। उनकी महानता देखकर अपना कुछ अंहकार घटता है।

गुरू महाराज द्वारा दी हुई संगत में रहने का सौभाग्य पाकर श्रद्धा भाव के अंकुर को फूटा देखकर मैं अपने आपको बहुत भागयशाली समझता हूं। दिल नाचने लगता है, इस खुशी का मैं वर्णन नहीं कर सकता। इसकी बरकतें गिणी नहीं जा सकती। एक जंगल में राह पर गिरी सूखी लकड़ी के अन्दर हरे अंकुर फूटने वाली करामात, मेरे अदना जंगली जीव के बंजर हृदय में गुरू ने और उनके कर्मचारियों ने श्रद्धा को बढ़ाकर करामात की है। एक नंग, कंगाल भिख़ारी को मालामाल कर दिया है।

बलदेव सिंह

भगवान व धर्म

आज की दुनिया में सब से अधिक आवश्यकता है शाति की, किंतु शांति रहे तो कैसे? लोग शांति की बातें तो बहुत करते हैं परन्तु शांति रहती नहीं। एक जगह दंगाफसाद रुका नहीं कि दूसरी जगह शुरू हो जाता है।

जैसे जैसे विज्ञान में प्रगति हो रही है, जैसे जैसे लोग शिक्षित होते जा रहे हैं, वैसे वैसे लोगों का स्वार्थ भी बढ़ता जा रहा है। नतीजा यह है कि कहीं अलग देश, अलग राज्य या अलग जिले की मांग की जा रही है। दूसरे जिएं या मरें, इस की किसी को चिंता नहीं। हमें तो अपने जीने और कमानेखाने की चिंता है और इस के लिए हम मरने मारने को भी उतारू रहते हैं।

इन्हीं स्वार्थों की खातिर आज हिंदू ऊंच नीच का भेद भाव रच कर आपस में लड़ रहे हैं। मुसलमान शिया और सुन्नी के नाम पर लड़ रहे हैं, उधर सिख ओर हिंदू भी लड़ रहे हैं। हिंदू मुसलमान का झगड़ा तो पुराना है ही। अब एक राज्य वाले दूसरे राज्य वालों से लड़ रहे हैं, एक देश दूसरे देश से लड़ रहा है। जैसे जैसे हम अनेकता में एकता लाने की बातें करते हैं। वैसे वैसे झगड़ा और अधिक बढ़ता दिखाई देता है।

धर्म, जाति, भाषा, संस्कृति आदि का जन्म हुआ था भौगोलिक परिस्थितियों के कारण, लोगों को एकसूत्र में बांधने के लिए, आपस में मेलमिलाप रखने के लिए। लेकिन यह तो उस समय की बात है कि जब आवगमन के साधन नहीं थे या बहुत सीमित थें लोग सीमित जगह में रहते थे, चंद लोगों से मुलाकात होती थी। तब धर्म, भाषा, जाति, संस्कृति आदि से उन्हें वास्तव में एकसूत्र में बंधने में मदद मिलती थी।

आज आदमी सुबह का नाश्ता भारत में करता है, दोपहर का भोजन लंदन में खाता है और रात सनफ्रांसिस्को में बिताता है। छोटे सफर की बात कीजिए तो आदमी बस या ट्रेन से एक दिन में एकदो जिले या एक दो राज्य तो पार कर ही लेता है।

आज के जीवन में "सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तान हमारा" का नारा हमें त्यागना होगा। आज हम केवल भारतीय, पाकिस्तानी, रूसी या अमरीकी नहीं रह गए हैं। आज हम सम्पूर्ण पृथ्वी के निवासी कहलाने लायक हो गए हैं। लेकिन इसे स्वीकार कौन करेगा? धर्म, भाषा, संस्कृति इन सब चीजों का मोह हमें अपने आप को पृथ्वीवासी कहने की जड़ को मजबूत कर रहा है - अंधविश्वास।

प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे लोगों के अंध विश्वासी होने का आभास तो मिल जाता है लेकिन वह स्वंय को अंधविश्वासी मानने को तैयार नहीं होता। फिर भी समय आने पर वह स्वयं सब से अधिक अंधविश्वासी होने का प्रमाण देता है। आखिर अंधविश्वास लोगों में आ कैसे जाता है? इस का सब से बड़ा कारण है - भगवान, जो न कभी था और न जिस के होने के कोई प्रमाण मिलने की संभावना है।

अज्ञान की उपज भगवान

एक तरफ हम भूतप्रेत पर विश्वास करने वालों को अंधविश्वासी कहते हैं, बकरा या नर बलि देने वाले को बुरी तरह कोसते हैं, तो दूसरी तरफ हम स्वयं नारियल, धूप, अक्षत, बेलपत्र, पुष्प और पकवान इत्यादि भगवान की मनगढंत मूर्तियों पर चढ़ा कर अपने स्वार्थ की सिद्धि की भीख मांगते हैं। भला वह 'स्रष्टा' कैसा जो अपनी ही सृष्टि के किसी प्राणी की बलि दिए जाने से खुश होता हो?

अगर थोड़ी देर के लिए हम मान भी लें कि भगवान ने ही यह सारी सृष्टि रची है, वह सर्वशक्तिमान है तो क्या वह किसी कायदे कानून में न रह कर अपने हर भक्त की इच्छा पूर्ति कर देगा? अगर दो व्यक्ति आपस में शत्रु हैं ओर दोनों ही भगवान से मदद के लिए प्रार्थना करते हैं तो क्या वह दोनों की प्रार्थना स्वीकार कर लेगा? अगर एक की स्वीकार करेगा और दूसरे की नहीं तो क्या वह दूसरे के प्रति अन्यास नहीं होगा?

भगवान को देखने का दावा करने वालों ने भी भगवान को कभी प्रत्यक्ष नहीं देखा है। वे केवल यह सोच कर चले हैं कि जब हम किसी चीज की रचना करते हैं तो हमारी और इस सृष्टि की रचना भी किसी ने अवश्य की होगी। किस्से कहानियां या धर्मग्रंथों को पढ़ कर भी कोई कोई भगवान को देखने का ढोंग करने लगते हैं।

कोई भी आदमी यदि हर समय एक ही बात सोचता रहे तो जाने पर उसे उसी सम्बंध में सपने आने लगते हैं। यदि कोई आदमी दिन में सांप को अचानक इस प्रकार देखे की भयभीत हो जाए तो उसे अंधेरे या सपने में भी ऐसा लगेगा जैसे सांप फन फैलाए उस के सामने खड़ा है। यह एक प्रकार की मानसिक कमजोरी है कि कभी कभी किसी चीज के न होने पर भी हमें उस चीज की अनुभूति हो।

तो फिर सभी लोग भगवान को मानने कैसे लगे? यह भगवान आया कहां से? वास्तव में आदिम लोगों को हमारी पृथ्वी के बारे में जानकारी नहीं थी। यहां तक कि अपने शरीर के बारे में भी जानकारी नहीं थी। जीवों का पैदा होना, बड़ा होना, बीमार पड़ना, मर जाना और फिर जलवायु का बदलना, आंधी, तूफान, वर्षा, गरमी, जाड़ा इत्यादि होना यह सब उन के लिए एक पहेली थी। इसीलिए लोगों ने यह मान लिया कि जरूर कोई ऐसी शक्ति है जो छिप कर इस दुनिया को अपनी मरजी से चला रही है।

इस प्रकार कल्पना की गई भगवान की, स्वर्गनरक की। देवी देवताओं की ही नहीं बल्कि जो जो

चीजें हमें तकलीफ और आराम देती थीं, सभी को भगवान या भगवान का रूप मान लिया गया, जैसे सूरज, चांद, वायु, अग्नि, जल। यही नहीं गंगा को भी जो कि धारा बदल कर लोगों को तकलीफ देती थी और साथ में पीने और खेती के लिए जल देती थी, देवी मान लिया गया। उस की पूजाअर्चना की जाने लगी ताकि वह हमें आराम ज़्यादा और तकलीफ कम दे। यही अंधविश्वास हमारे अंदर बचपन से जब हम कुछ नहीं जानते होते, कूट कूट कर भर दिया जाता है।

जब हम होशियार हो जाते हैं, दुनियां को कुछ कुछ समझने लगते हैं, भगवान के अस्तित्व को कुछ कुछ समझने लगते हैं, तब भी हम जब किसी मंदिर के पास से गुजरते हैं तो न चाहते हुए भी अनायास ही हमारे दोनों हाथ जुड़ कर ऊपर की और उठ जाते हैं, मांबाप, अड़ोसपड़ोस वालों द्वारा हमारे मन में बिठाए गए उस तथाकथित भगवान को प्रणाम करने के लिए।

यह सब इसलिए होता है कि हम दुनिया को नहीं समझ पाते हैं, हमारी दुनिया, हमारा ब्रह्ममांड, हमारी आकाशगंगा, इतनी बड़ी है कि इस को समझने के लिए हमारा विज्ञान भरपूर कोशिश करते हुए भी इस का कुछ ही भाग समझ पाया है। यदि पृथ्वी के बारे में थोड़ा भी समझना हो जैसे रातदिन क्यों होते हैं, ग्रहण क्यों लगता है, जाड़ा, गरमी, बरसात क्यों होती है, जीव क्यों और कैसे पैदा होते हैं और फिर मर क्यों जाते हैं, हमारी खती कैसे होती है तो हमें विज्ञान को समझना होगा।

किंतु विज्ञान को समझने के लिए गणित को समझना जरूरी हैं। गणित तो सिर्फ 15 प्रतिशत शिक्षित आदमी ही समझ पाते हैं। फिर 15 प्रतिशत में सिर्फ एकतिहाई लोग ही विज्ञान को समझ पाते हैं। जिसे समझ में आ भी जाता है कि भगवान है ही नहीं, उसे दूसरों को अपने मन की बात बताना पहाड़ से भी अधिक कठिन हो जाता है।

इस कल्पित भगवान से लोग इतना अधिक डरते हैं कि वे एक तरफ तो कहते है कि भगवान की मरजी के बिना पता भी नहीं हिलता, और दूसरी तरफ यदि कोई 20 सवारी वाली गाड़ी दुर्घटना ग्रस्त हो कर 15 आदमी मर जाएं और 5 आदमी जिंदा बच जाएं तो वे कहेंगे कि 5 आदमियों को भगवान ने बचा लिया। वह किसी भी हालत में यह नहीं बोल पाएंगे कि 15 आदमियों को भगवान ने मार डाला। किंतु दोनों बातों का अर्थ तो एक ही है कि भगवान की मरजी के खिलाफ कोई काम ही नहीं होता। किंतु जहां मरने वाली बात है वहा ड्राईवर ने मार डाला ओर बचने वाले को भगवान ने बचा लिया। यह कैसी अजीब बात है?

सोचने समझने की बात यदि कि गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हुई तो किसी कारण से हुई। यही भगवान को बचाना ही था तो दुर्घटना क्यों होने देता? यदि मारना था तो फिर सामने आ कर उसे उनके गुनाहों को बताते हुए आमने सामने मारना था ताकि दूसरे लोग दोबारा वही गुनाह करने का साहस न करें। यदि भगवान सर्वशक्तिमान है तो उसे न तो पुलिस का डर होना चाहिए न कानून का फिर सामने आ कर मारने से क्यों डरता है?

भय से बना भगवान

हम देखते हैं कि पानी ऊपर से बरसता है ऊपर ही भयंकर रूप से बादल गरजता है, और ऊपर से ही बिजली गिरती है जिस से अनेक बार काफी विनाश हो जाता है। इन्हीं सब कारणों से तथाकथित भगवान के ऊपर होने का अनुमान लगाया गया,

क्योंकि भगवान ऊपर रह कर ही ये सब काम करता है, इसी लिए भगवान का नाम 'ऊपर वाला' पड़ गया। आज के वैज्ञानिक युग में जब पूरे ब्रह्मांड के बारे में काफी कुछ मालूम कर लिया गया है, यह सिद्ध हो गया कि ऊपर कोई न तो भगवान है, न स्वर्ग, और न ही कोई धरती के नीचे कोई पाताल है या नरक।

आदिकाल का मानव तत्कालीन परिस्थितियों के कारण भगवान को भय से और इस भ्रंति के कारण मानने लगा कि शायद इस से उस की अपनी सुख शांति बनी रहेगी, किंतु आज के विवेकशील और पुराने संस्कारों से मुक्त मानव को भगवान को मानने का कोई कारण ही दिखाई नहीं पड़ता। भगवान को न मानने से उसे कोई खतरा, कोई हानि भी दिखाई नहीं पड़ती। केवल अंधविश्वास ही एक चीज है जो अदृश्य होते हुए भी भगवान को मानने के कारण हम पथभ्रष्ट हो जाते हैं, आपस में लड़ते झगड़ते हैं।

यही नहीं, अपने भगवान के प्रति श्रद्धा दिखाने के लिए हम दूसरे धर्मावलंबियों से घृणा तक करने लगते हैं, उन की जान के दुश्मन बन जाते हैं। यूं तो हम बराबर यह कहते नहीं अघाते कि यह सब ईश्वर की माया है, हम सब उसी की रचना हैं, लेकिन जब अपने अपने धर्म की बात आती है तो यह तथाकथित ईश्वर भी सब धर्मावलंबियों का अलगअलग हो जाता है। हम अपने समुदाय के स्वार्थ की ही बातें करने लगते हैं और अपने धर्म की रक्षा के नाम पर हथियार जमा करने लगते हैं तो समय आने पर मानव विनाश का कारण बनते हैं।

अंधविश्वास का एकमात्र कारण

इस प्रकार हम देखते हैं कि यह भगवान ही सारे अंधविश्वासों का कारण है। जब तक हमारे बीच भगवान रहेगा तब तक अंधविश्वास भी बना रहेगा और जब तक अंधविश्वास रहेगा तब तक हम अपने धर्म, जाति, मातृभूमि, संस्कृति, संस्कारों भाषा, रंगभेद इत्यादि का मोह नहीं छोड़ सकते। इस प्रकार एक समुदाय के लोगों का दूसरे समुदाय के लोगों से झगड़ना बंद नहीं हो सकता।

प्राय: प्रत्येक देश की सरकार किसी न किसी प्रकार के सामुदायिक झगड़े को लेकर शक्ति, पैसा और समय बरबाद कर रही है, स्वंय हमारे देश में दूसरे देशों की अपेक्षा कुछ अधिक ही सामुदायिक और सांप्रदायिक झगड़े होते हैं। सरकार को इन झगड़ों को शांत करने के लिए काफी रुपया, समय और शक्ति नष्ट करनी पड़ रही है, जिस से विकास के कामों की गति धीमी पड़ गई है।

अत: आज के युग में पुराने नारों को भुला कर कुछ नए नारों की आवश्यकता है जैसा कि:

"कुदरत ने दी है एक ही धरती, हम ने कहीं भारत कहीं ईरान बनाया।

कुदरत ने पैदा किया है मानव को, हम ने किसी को हिन्दु किसी को मुसलमान बनाया।"

आज आणविक अस्त्रों के निर्माण को बंद करने की आवाज सारी दुनिया में उठ रही है, लेकिन यह तभी संभव है जब सब लोगों में आपसी भाईचारे की भावना हो। वे एक दूसरे के बीच धर्म, जाति या वर्णों की दीवार खड़ी न कर के सब को सच्चे दिल से एक सा इंसान समझें। आज का इंसान आपसी भाईचारे के, अनेकता में एकता के, इनसानियत के बड़े बड़े भाषण तो दे डालता है, लेकिन वही इनसान जब अपने समुदाय में पहुंचता है तो उस की इनसानियत सिर्फ अपने समुदाय में सिमट जाती है वह अपने समुदाय की

भलाई के लिए दूसरे समुदाय के विरुद्ध षडयंत्र रचने में जुट जाता है। क्या इस का मतलब यह है कि वह आदमी बहुत खराब है? नहीं, वह आदमी खराब नहीं है। वह भी दूसरों की भलाई चाहता है, लेकिन सिर्फ अपने समुदाय के लोगों की।

इन सब का कारण है वह शिक्षा, वे संस्कार जो बचपन से ही उस के मन में कूटकूट कर भर दिए हैं। इस स्थिति को बदलने के लिए सभी तरह के अंध विश्वासों को हटाने की आवश्यकता है। इस के लिए रूढ़िवादिता में विश्वास न करने वालों को आगे आना होगा। उन को अन्य लोगों को समझाना होगा। शिक्षा नीति में तदनुसार परिवर्तन करना होगा। ताकि 21 वीं सदी में प्रवेश करने वाली पीढ़ी सारी दुनिया को एक समझे।

लेखकों का विशेष रूप से यह कर्तव्य है कि वे लोगों के अंधविश्वास को हटाने में योगदान दें। पाठ्य पुस्तकों, परीकथाओं और अदृश्य शक्तियों की गुणगाथाओं से भरी रहती है। इस से भविष्य के कर्णधार छात्रों का मनोबल गिरता हैं। वे तथाकथित भगवान तथा अदृश्य शक्तियों पर भरोसा कर असाध्य आकांक्षाओं के पूरा होने का सपना देखने लगते हैं और पथभ्रष्ट हो जाते हैं। किसी के साथ अन्याय कर के भी वे समझते है कि भगवान की पूजाअर्चना या दानपुण्य कर के वे दोषमुक्त हो सकते हैं।

जब हम भौतिक विज्ञान या जीव विज्ञान पढ़ते हैं तब तो हमें कहीं पर भगवान नहीं मिलता, कहीं पर कोई अदृश्य शक्ति काम करते हुए नहीं मिलती, रूढ़िवाद नहीं मिलता, अंधविश्वास नहीं मिलता। इसी तरह कथाकहानियों से, उपन्यासों से, साहित्य से भगवान को निकालना होगा, तभी अंधविश्वास हट सकता है।

(सरिता से संभार)

शेष पृष्ठ 20 का बाकी

जिन अधिकारी आत्माओं तक यह प्रभाव पहुँचते हैं, वह पाप मिथ्या से निजात पाते हैं।

15 - 13 - 2018, सुबह 9:30 बजे:- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि नेचर के भीतर उसकी शक्तियां काम करती हैं। मनुष्य को उसकी अपनी शक्तियों चलाती हैं। यदि आसाराम को अपनी शक्तियों का ज्ञान होता तो आज वह इस बुढ़ापे में जेल का दुख न भोगता।

दो नौजवान, बच्चों का स्कूल खोलना चाहते थे, कनल जी ने पूछा कि क्या आप कभी बच्चों की वर्तमान हालत देखकर रोए है? हमदर्दी के बिना बच्चों की सेवा नहीं कर सकते।

मनुष्य को देवत्व का शोला कहा जाता है, परन्तु मनुष्य नीच सुखों का प्रेमक है। स्वार्थ का नीच भाव मनुष्य का नाश करता है। अंहकार (Hydro Headed Monser) सौ सिरों वाला भूत है। अध्यात्मिक नियम यह है कि हम दूसरों का भला करके ही अपना भला कर सकते हैं।

सभा के अन्त में एक नौजवान ने खड़े होकर तीन धर्म सम्बन्धियों के प्रति अपनी बेरुखी के लिए दुख का प्रकाश किया और उनके पैरों पर सिर रखकर क्षमा - याचना की। उन्होंने कहा कि मैं इनके प्रति शुक्रगुज़ार बनूंगा और इनका सन्मान किया करूंगा। सभा के अन्त में 2000 रूपये दान प्राप्त हुआ।

इन सचाईयों को मत भूलो

भगवान् देवात्मा ने जिन कई सचाईयों का प्रकाश और प्रचार किया है, उनमें से एक विचित्र सचाई का नाम परिवर्तन विषयक नियम या तत्व है। परिवर्तन के नियम या तत्व से क्या तात्पर्य है? परिवर्तन के नियम या तत्व से हमारा यह तात्पर्य है, कि नेचर अपने सारे रूप में प्रतिक्षण बदलती रहती है। नेचर के परितर्वनशील होने से उसका प्रत्येक छोटा वा बड़ा जीवित वा अजीवित परिवर्तित होता है। इस परिवर्तन विषयक नियम के अधीन सारा मनुष्य जगत भी है, और मनुष्य जगत का प्रत्येक मनुष्य भी है। इस परिवर्तन विषयक नियम के अधीन होने से प्रतिक्षण मनुष्य का न केवल शरीर बदलता है, बल्कि उसका आत्मा भी बदलता है। नेचर का यह परिवर्तन विषयक कार्य अटल है। दृष्टांत के तौर पर करोड़ों मनुष्यों का शरीर इस नियम की सत्यता को प्रकाशित करता है। क्या यह सत्य नहीं है, कि प्रत्येक मनुष्य का शरीर माता के पेट में बनता है। माता के पेट से बाहर आकर प्रत्येक मनुष्य असहाय पैदा होता है, चाहे वह महात्मा या बुद्ध, ईसा या मुहम्मद, चर्चिल या गांधी क्यों न हो। प्रत्येक असहाय बच्चा धीरे-धीरे परिवर्तित होना शुरू करता है। बच्चे से जवान हो जाता है। जवान से बूढ़ा हो जाता है। और बूढ़ा होकर स्थूल शरीर के विचार से मर भी जाता है। इतिहास को पढ़ने वाला प्रत्येक जन जानता है, कि सदियों तक भारतवर्ष में मुग़लों का राज्य रहा है। इन मुग़लों की महारानियों में से एक का नाम नूरजंहा था। उस समय की दुनियां में उसके सौन्दर्य की सारे भारतवर्ष में धाक थी। उसके सौन्दर्य पर ही मोहित होकर शहनशाह जहांगीर ने उसे अपनी मलिका बनाने के लिए बहुत बड़ा संग्राम किया और उसे अपनी मलका बनाकर बहुत बड़ा सौभाग्य समझा। ऐसी विख्यात सुन्दरी क्या अपनी सुन्दरता को स्थिर रख सकी? क्या यह सच नहीं, कि उसकी आयु के बढ़ने के साथ उसका सौन्दर्य दिनों दिन घटता गया। वह मलका होकर भी अपने शारीरिक सौन्दर्य के घटने के कार्य को बन्द न कर सकी। क्या वह अपने बुढ़ापे को रोक सकती थी? क्या सारे भारत की महारानी होकर अपने स्थूल शरीर की मृत्यु को रोक सकती थी? जिस सुन्दर शरीर के प्रेम में शहनशाह जहांगीर तक भी फंस गया था, क्या वह सुन्दर शरीर नूरजहां के परलोक गमन के बाद क़बर में दफ़न नहीं किया गया ओर कीड़ों के हवाले नहीं हो गया? क्या यही परिणाम प्रत्येक सुन्दर स्त्री और पुरुष नियमानुसार क्या अपने यौवन और क्या अपने सौन्दर्य को खो बैठेगा, तब क्या यह मूर्खता नहीं, कि मनुष्य इस खोए जाने वाले यौवन और सौन्दर्य के पीछे मन को ललचाए और दिल को तड़पाए और अपने ही हाथों से अपने सुख और जीवन को बुरी तरह बरबाद करे।

इस परिवर्तन विषयक नियम का अटल कार्य मनुष्यात्मा के जीवन पर भी पूर्ण रूप से अधिकार रखता है। प्रत्येक मनुष्यात्मा अपनी चिन्ताओं और क्रियाओं से क्षण-क्षण में परिवर्तित होता है और परिवर्तित होकर अपनी दशा में या तो पतित या नीच बनता है, या उच्च या श्रेष्ठ बनता है। परिवर्तन के अटल नियम के अधीन हमारे आत्मा में जो परिवर्तन होता है, उस परिवर्तन का फल उसी समय हमारे जीवन में उत्पन्न हो जाता है। उसको कोई रोक नहीं सकता।

इस फल को देने वाले की भी कोई ज़रूरत नहीं। नेचर के जिस अटल नियम को हम अपने जीवन में पालन करते हैं, उसके फल को हम रोक नहीं सकते। जिस प्रकार ग़लती से भी विष खाने से हम चाह कर भी उसके परिणाम से नहीं बच सकते, उसी प्रकार नीच चिन्ताएं और नीच क्रियाएं करके हम चाह कर भी आत्मिक पतन को नहीं रोक सकते। एक-एक मुसलमान यह कह सकता है, कि मैंने बकरा ईद के अवसर पर अपने अल्ला को खुश करने के लिए भेड़ बकरी या गाय को कत्ल किया है, और इसलिए मैं पतित नहीं हुआ और नीच नहीं बनूंगा। लेकिन उसका यह कहना व्यर्थ है। पाप की गति पाप की गति ही है और वह पाप की गति पाप के ही फल उत्पन्न करेगी, चाहे हम किसी मिथ्या विश्वास के कारण उसे पुण्य की गति ही समझें। जिन हत्यारे खुदा परस्तों ने अपने मिथ्या विश्वास के अनुसार जहाद (मज़हबी जंग) करके लाखों बेगुनाह परिवारों को नष्ट किया ओर उनके बीवी बच्चों को गुलाम बनाया, वह हत्यारे आत्मिक जीवन के विचार से दुष्ट और पापी बन गए चाहे वह अपने आपको धर्मवान् समझते रहें।

एक जन को मैं मिलने के लिए गया। वह ईश्वर भक्त समझा जाता था और बड़ी कथाएं करता था। मेरे साथी ने उससे पूछा, कि क्या तुम रिश्वत लेते हो? उसने उनसे कहा कि जी हां लेता हूं। मेरे परम दयालु गुरु ने मुझे इस की आज्ञा दे दी है। परम दयालु गुरु रिश्वत को ठीक समझ कर रिश्वत के स्वाभाविक फल को रोक नहीं सकता था। रिश्वत लेने के साथ ही वह जन बद्दयानत होता गया और बद्दयानत होकर दिनों दिन आत्मा के विचार से पतित होता गया।

लाखों जन यह विश्वास करते हैं, कि वह झूठ, ठग्गी, कपटता आदि नाना प्रकार के बुरे कामों से न इकट्ठा करके, यदि थोड़ा सा धन किसी गुरूद्वारे किसी मन्दिर या किसी भलाई के काम में दे दें, तो उनको अपने पाप जीवन का फल भोगना नहीं पड़ेगा। कैसी ख़ौफ़नाक आत्मिक अन्धता! ठग्गी से आदमी ठग बन जात है। कपटता की गति से मनुष्य कपटी बन जाता है। ठग या कपटी बनना आत्मा की नीच गति है। और आत्मा की प्रत्येक नीच गति आत्मा का पतन लाती है। और आत्मा के पतन से मनुष्य अपने आत्मिक बल या निर्माणकारी बल को खोता जाता है। आत्मिक अन्धकार-ग्रस्त मनुष्य यह बोध नहीं करता, कि यदि आत्मिक बल या निर्माणकारी बल नष्ट हो गया, तो मेरा आस्तित्व कहां रहेगा। शोक! कि मनुष्य अपने आत्मिक पतन से नहीं डरता है ओर यह भी नहीं जानता कि प्रत्येक मिथ्या और अशुभ की गति से मनुष्य पतित होता है। क्या हुआ यदि मनुष्य ने धन कमाया? क्या हुआ यादे मनुष्य ने जायदाद बना ली? क्या हुआ यदि मनुष्य ने सांसारिक वैभव या पदवी पा ली? लेकिन उनके प्राप्त करने में उसने मिथ्या और अशुभ की जो गतियां ग्रहण कीं, उनसे अपने आत्मिक पतन को बढ़ाया, और अपने निर्माणकारी बल को खोया। कितना बड़ा घाटा!

नेचर का यह अटल नियम है, कि मिथ्या और अशुभ की गति किसी सूरत में भी उचित नहीं है। हो सकता है, कि किसी का लक्ष्य उच्च हो, परन्तु यदि उसको पूरा करने में उसकी गतियां मिथ्या और अशुभ मूलक हों, तो उसका आत्मिक पतन अनिवार्य है। किसी जन को किसी धर्म समाज में लाने के लिए झूठ

का व्यवहार पूर्णत: अनुचित है। झूठ की गति आत्मिक पतन लाती है। हम अपने आत्मिक पतन से और किसी के आत्मा को शुद्ध नहीं बना सकते।

नेचर के इस अटल परिवर्तन कार्य के अनुसार जब हम प्रतिक्षण या तो उच्च वा श्रेष्ट बनते हैं, या पतित वा नीच बनते हैं और जब हम एक स्थान में ठहर नहीं सकते, तब हमारा सबसे बढ़कर यह कर्त्तव्य है, कि हम उन गतियों का ज्ञान लाभ करें, कि जिन से उच्च या नीच बनते हैं, पतित या श्रेष्ट बनते हैं, और हम ऐसी सब गतियों से डरें कि जिनके करने से हम पतित दशा को प्राप्त होते हैं, और हम उन कुल गतियों को धारण करें, जिनसे हम श्रेष्ट बनें।

हमें यह पूर्ण विश्वास है कि हम सब के सब किसी न किसी समय इस पूथ्वी को त्याग देंगे। यहां के धन पदार्थ और सम्बन्धियों को हमने छोड़ना ही होगा। परन्तु जिन गतियों को हम करते रहे हैं, उनके फलों से हम पीछा नहीं छुड़ा सकते। यदि हमने दुनियां के पदार्थों ओर अन्य सम्बन्धियों को पाने और रखने की ख़ातिर अशुभकर गतियां की हैं, तो हमारा आत्मिक पतन अवश्य हो गया है। और यह आत्मिक पतन लम्बे काल तक परलोक में भी हमारा पीछा न छोड़ेगा। मिथ्या और अशुभकर गतियों का कैसा भयानक परिणाम!!

पाठकगण! पढ़ें और विचारें और डरें।

(अध्यात्मिक चेतना के नये स्वर)

एक पत्र

एक

शुभ संग्राम
(12 मार्च से 15 मार्च)

श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी चण्डीगढ़ से 12 मार्च को मानसा में डाक्टर सुबोध कुमार जी को मिले। उन्हें संगत रखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने 2000 रुपये दान और चन्दा आदि का दिया। श्रीमान जी ने उनके बेटे की शादी की मुबारकबाद दी और उन्हें एक पुस्तक भेंट की। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी तलवंडी साबो से आकर श्रीमान जी के साथ मिल गए।

मल्लेका :- रात 8:30 बजे सभा की गई। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने धर्म के विषय में चर्चा की, सच्चा धर्म अच्छा इन्सान बनना है। मिथ्या और पापों से बचना है। अच्छा पुत्र, भाई, पति, पत्नि, बहन, पड़ोसी बनना है। अच्छे व्यवहारों की कई घटनाएं बताई।

13 - 3 - 2018, सुबह 9 बजे:- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि देव धर्म विज्ञान मूलक धर्म है। नेचर में प्रत्येक अस्तित्व जड़ और शक्ति से बने हैं। जहां गति है, वहां शक्ति है। सभापति जी ने काम बासना वा स्वाद वासना की शक्ति के बढ़ने के भयानक फलों को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया।

इन शक्तियों से निजात मनुष्य के जीवन की रक्षा के लिए आवश्यक है। मनुष्य जीवन की रक्षा सात्विक शक्तियों को विकसित करने में है। श्रीमान जी ने ईमानदारी, पवित्रता, और दूसरों के गुणों को सराहने के उच्च भावों को विस्तार से बताया। सभा में प्रिंसीपल सिरताज जी और उनके कुछ अध्यापिक भी शामिल हुए।

13 - 3 - 2018, रात 8:15 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि जैसे हवा और पानी जीवन के लिए आवश्यक है। वैसे ही आत्मा के लिए अच्छे वातावरण की आवश्यकता है। दूसरों के अधिकारों और सन्मान की समझ देव धर्म के उच्च मण्डल में आती है। इस वातावरण की विशेषता यह है कि मनुष्य का ध्यान अपनी कमियों की ओर जाता है। अपने दुर्व्वहारों की ओर जाता है। वह अपनी ग़ल्तियों को स्वीकार करने के लिए मजबूर हो जाता है। उनके लिए क्षमा - प्रार्थी वा परिशोध करके ही सच्ची शान्ति प्राप्त करता है। यह वातावरण उच्च मेल के सुन्दर दृश्य पैदा करता है। अन्मेल दूर करने की बहुत सुन्दर घटनाएं पेश की।

14 - 3 - 2018 सुबह 9 बजे:- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी इस सभा में बताया गया कि धर्म की क्यों आवश्यकता है? धर्म के बिना मनुष्य अनुचित दुखों में फंसने के लिए मजबूर है।

गुरू महाराज जी ने फरमाया है कि सुखी होने के लिए सर्वप्रथम आठ पापों से बचना आवश्यक है। दूसरा मिथ्या विश्वासों वा मिथ्या साधनों द्वारा जो दुख उत्पन्न होते है, उनसे बचना आवश्यक है। इससे आगे अगर नीच सुख बढ़ जाते हैं, तो मनुष्य दुखों का घर बन जाता है। इन नीच शक्तियों की भयानकता को अनुभव करके उनसे बचने का मार्ग गुरू महाराज बताते हैं। ईमानदारी, पवित्रता, धर्म के अंग हैं। उससे आगे दूसरों के गुणों को देखने और उपकारों को देखकर, सेवा करके मनुष्य धर्मवान बन जाता है।

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

14 – 3 – 2018 रात 8:15 बजे:– सभापति जी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने नेचर के अटल नियमों के विषय में बताया। सेहत के नियम, विद्या प्राप्ति के अपने नियम हैं। प्रत्येक घटना नियमों के अनुसार होती हैं।

जो घटनाएं नियमों के विरूद्ध बताई जाती हैं, वह सब मिथ्या हैं। देवात्मा के भीतर ही अद्वितीय देव शक्तियां आई हैं। देव शक्तियों के विकसित होने से जो देव ज्योति और देव तेज विकसित हुआ वह बिल्कुल निराला है। उनके जीवन के महानतम प्रभाव पापी, दुर्बल मनुष्यों में करामाती परिवर्तन करते हैं। परिवर्तन की बहुत सुन्दर घटनाओं का वर्णन किया।

बाद में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने स्पष्ट किया कि धर्म स्थानों और धर्म साधनो की भरमार होने पर भी मिथ्या और पाप दिन पर दिन बढ़ रहे हैं, जिन

शेष पृष्ठ 15 पर

महान खुशखबरी

सब साथी धर्म सम्बन्धी और पाठकगण यह जानकर पाक खुशी और गर्व अनुभव करेंगे के अब अपनी समाज (देव धर्म मिशन) बकायदा तौर पर देव समाज (गलोबल) के Dev Samaj (G) नाम पर रजिस्ट्र हो गई है। अर्थात इसको सरकार की ओर से मान्यता प्राप्त हो गई है। इसलिए सम्बन्धित जनों को बहुत बहुत मुबारक।

बलदेव सिंह सैक्रटरी

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री–देव–धर्म–मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts